P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय मूर्तिशिल्प में रंजित कर्णाभूषण में विषय वैविध्य

सारांश

भारतीय मूर्तिशिल्प सौन्दर्यात्मक दृष्टिकोण से अद्वितीय है। भारतीय मूर्तिशिल्प का उद्भव सम्भवतः सिन्धु घाटी सभ्यता से माना जाता है सैन्धव सभ्यता के पश्चात् मूर्तिकला धीरे–धीरे अपने चर्मोत्कर्ष पर पहुँच गयी। सौन्दर्यात्मक दृष्टिकोण से मूर्तिशिल्प में आभूषण अलंकरण का विशेष महत्व रहा है।

मुख्य शब्द : भारतीय मूर्तिशिल्प, कर्णाभूषण, सौन्दर्यात्मक, गुल्फभूषण।

रूनझुन राजावत
शोध छात्रा,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

तनुजा सिंह
शोध निदेशक,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

सैन्धव सभ्यता से लेकर प्राचीन काल मध्यकाल में बने सभी मूर्तिशिल्प को पूर्णतः वस्त्रों से सुशोभित न कर आभूषणों से सुशोभित किया गया है। मनुष्य द्वारा आभूषण शरीर के सभी अंगों पर धारण किये जाते हैं। सिर के मुकुट से लेकर पैरों में किंकिणी, बिछिया तक आभूषण को वर्गीकृत किया गया है। जिस प्रकार अंगों के अनुसार आभूषण में विविधता है उसी प्रकार एक अंग के आभूषण अलंकरण में भी भिन्नता है। शरीर के सभी अंगों के आभूषण को उनके अलंकरण, आकृति, आकार–प्रकार के अनुसार वैदिक संहिताओं एवं साहित्य में कई नाम दिए गए हैं।[1]

आभूषणों का वर्गीकरण

1.	शिरोभूषण	:–	सिर के आभूषण
2.	कर्णाभूषण	:–	कान के आभूषण
3.	नासाभूषण	:–	नाक के आभूषण
4.	कंठाभूषण	:–	गले के आभूषण
5.	बाहुभूषण	:–	बाजू के आभूषण
6.	मणिबंध भूषण	:–	कलाई के आभूषण
7.	हस्ताभूषण	:–	हाथ के आभूषण
8.	कटिभूषण	:–	कमर के आभूषण
9.	पाद–गुल्फभूषण	:–	पैरों के आभूषण

कर्णाभूषण में विषय–वैविध्य

भारतीय संस्कृति में कर्ण छेदन की प्रक्रिया महत्वपूर्ण मानी गई है। कर्ण छेदन प्रक्रिया को जीवन के 16 संस्कारों में से एक माना गया है।[2] इस संस्कार को जन्म, विवाह और मृत्यु के बराबर ही महत्व दिया गया है। कान में आभूषण मुख्यतः दोनों कानों में पहने जाते थे और दोनों एक समान होते थे परन्तु कहीं–कहीं कुछ मूर्तिशिल्प में दोनों कानों के आभूषण में भिन्नता दिखाई देती है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त कुछ आकृत्तियों में दोनों कानों में अलग–अलग कर्णाभूषण पहने हुए मिलते हैं यह स्त्री एवं पुरूष दोनों द्वारा धारण किये जाते थे। वेद, ब्राह्मण उपनिषद् एवं संहिताओं में कर्णाभूषणों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। कर्णाभूषण के नाम उनके आकार–प्रकार एवं अलंकरण के आधार पर निम्नलिखित हैं'–

कान के आभूषण

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कर्णषोभना – कुण्डल की भाँति गोलाकृति वाला।
चक्र कर्णफूल – चक्राकार कर्णफूल की भाँति।
कर्ण फूल – फूल के आकार का कर्णाभूषण।
कुण्डल –गोलाकार लटकने वाला कर्णाभूषण जो कि कान में तार या पेंच की सहायता से पहना जाए।
पत्र–कुण्डल – पत्ते के आकार के कुण्डल।
प्रावेप –कर्णफूल की भाँति (ऊपर से ढका हुआ प्रतीत हो)
प्रर्वत–जिस बाली के दोनों मुँह एक–दूसरे पर चढ़े हुए हों।
कर्णिका – खजूर के वृक्ष या पत्ते की आकृति वाला कर्णाभूषण।
प्राकाश – कुण्डल की भाँति गोल।
कर्णवेष्टक – कान को ढकने वाला कर्णाभूषण।
शिखिपत्र – रंग–बिरंगी मणियों से गूंथकर बनाया गया आभूषण।
कर्णमुद्रा – मुद्रा की भाँति गोल।
कर्णवलय – आकृति में गोल।

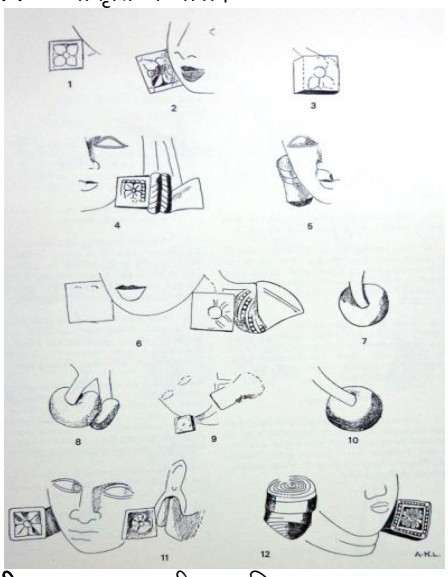

कर्णोत्कीलक – डमरू की आकृति वाला।
दन्तपत्र – रत्नों से जड़ित मुक्त मणियों की लड़ियाँ लटका हुआ।
कण्ण वालिका – कानों की बाली।
झुमके – घंटीनुमा आकृति वाले घुंघरू लटकते हुए कर्णाभूषण।
कीलाकार – कील की आकृति वाला कर्णाभूषण।
मुरकी – कुण्डल से छोटी कान से चिपकी हुई ऊपर से पतली व नीचे से चौड़ी गोलाई लिए हुए।
तुरकी – मोतियों का झुग्गा लटका कर्णाभूषण।
तरौना – कर्णफूल की भाँति परन्तु पुष्पाकृति अधिक उभरी हुई।
रत्न कुण्डल – रत्न जड़ित कुण्डल।
सिंह कुण्डल – सिंह की आकृति वाले कुण्डल।
शंखपत्र कुण्डल – शंखाकृति वाले (शंख को बीच से काटकर बनाया गया शंखाकार पत्ते की तरह दिखने वाला।)
सर्प कुण्डल – सर्पाकृति वाले कुण्डल।
गज कुण्डल – गज की आकृति वाले कुण्डल।
वृत्त कुण्डल – कमल की भाँति खिले हुए कंधों तक लटकते हुए कुण्डल।
मकर कुण्डल – मकराकृति वाले कुण्डल।
मुक्ताटांटक कुण्डल – मोतियों का बना सोने के तारों से जोडकर बनाया गया।
द्विरांजिक – बीच में मणि एवं दोनों ओर मोती पिरोकर बनाया गया छल्लेनुमा कर्णाभूषण।
चिरंजक – मध्य में मोती लगा छल्लेनुमा कर्णाभूषण।
वज्रगर्भ – मोती के बीच में हीरा जड़ित कर्णफूल।
ललतिक – बीच में हीरा जडित स्वर्ण कर्णाभूषण।
कर्णेन्दु – कान के पीछे पहना जाने वाला कर्णाभूषण।
मुकुल – निम्बोली के आकार का रत्न, मणि, मोती, मानक जड़ित कर्णाभूषण।
बीर – बाली न होकर कर्णफूल या रथ चक्र जैसा कर्णाभूषण।
बीर बली (वीरवलय) – तीन घुण्डियाँ जड़ित चौडी बाली।
खुंभी – मशरूम के आकार का जड़ाऊ कर्णाभूषण।
खुटिला – दीपक की लौ के समान आकृति वाला।
गोशपेंच – कान का पेंच।
मुरासा – मोतियों से गूंथा वलयाकृति का आभूषण। जो लटकाकर पहना जाए एवं कपोलों को स्पर्श करे।
झुलमूली – पत्ता, पीपल पत्ता, झोटना, झाला आदि नाम से भी जाना जाता है। यह पत्ते के आकार का आभूषण होता है।

भारतीय मूर्तिशिल्प में रंजित कर्णाभूषण

भारतीय मूर्तिशिल्प में कर्णाभूषण में विषय–वैविध्य देखने को मिलता है। मौर्यकाल की प्रसिद्ध प्रतिमा दीदारगंज यक्षिणी ने शंखाकृति कर्णाभूषण धारण किया हुआ है। इस प्रतिमा के कर्णाभूषण की ऊपरी सतह गोल आकार लिए हुए सपाट है फिर कुण्डलीकृत शंखु है तथा शंख के शीर्ष बिन्दु पर दो या तीन कुण्डलीकार वृत्त है। जो सम्भवतः शंख के मध्य भागों को दर्शा रहे हैं। यह कर्णाभूषण कुषाण काल की प्रतिमाओं में भी प्रचलित रहा।

दीदारगंज यक्षिणी, मौर्यकाल

हड़प्पा से कर्णफूल के समान कर्णाभूषण प्राप्त हुए हैं।[3] कुछ कर्णाभूषण तीन कोण के समान हैं। मोहनजोदड़ों से बटन जैसे गोल, कीलाकार और कोणाकार कर्णाभूषण प्राप्त हुए हैं। मौर्यकाल से प्राप्त मातृदेवी की मृण्मूर्ति के कानों में भाँति–भाँति के कर्णाभूषण दिखायी देते हैं। दाएँ कान में बड़ा लम्बा एवं बाएँ कान में ढोलनुमा कर्णाभूषण धारण किया हुआ है। शुंग काल की प्रतिमाओं के कानों में आयताकार धातु के टीकरे–पिरोये हुए कुण्डल पहने हुए हैं।

चूलकोका यक्षी, भरहुत, शुंग वंश

पीतलखोरा से प्राप्त यक्ष के कानों में बड़े–बड़े घुमावदार कुण्डल दिखाई देते हैं इन कुण्डलों का घुमाव छः बार है इन्हें धारण करने के लिए कानों में छिद्र बहुत बड़े किए गए हैं। यह कुण्डल किसी चक्राकार अंगूठी की भांति ही है।

पीतलखोरा यक्ष

कहीं–कहीं पर श्लाका जैसे कर्णाभूषण भी दिखाई देते हैं। जिनके दोनों सिरों पर गाँठे होती थी।[4] कुषाण काल के मूर्तिशिल्प में कर्णोत्पल, तलपत्तक (ताड़ के पत्ते के समान) पुष्प के आकार, डमरू के आकार, भारी कुण्डल, मछली एवं कमल के नमूने से अलंकृत कर्णाभूषण धारण किए हुए हैं। गुप्तकालीन कर्णाभूषण में कर्णपूर, कुण्डल कनक कमल, अवंतस, त्रिकण्टक, कर्णोत्पल आभूषण अधिक प्रचलन में रहे।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय मूर्तिशिल्प में रंजित कर्णाभूषण में विषय वैविध्य का अध्ययन करना है।

निष्कर्ष

भारतीय मूर्तिशिल्प के आभूषणों का विशेष महत्व है। सौन्दर्यात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी इनका महत्व रहा। एक–एक आभूषण में इतनी विविधता का ज्ञान मूर्तिशिल्प द्वारा धारित आभूषण से होता है। कान के आभूषण में ही इतनी विविधता भारतीय मूर्तिशिल्प में देखने को मिलती है। यहीं विविधता आधुनिक युग में प्रचलित कर्णाभूषणों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। प्राचीन मूर्तिशिल्प के यही आभूषण अलंकरण आज वर्तमान युग में भी लोकप्रिय हैं। अतः भारतीय मूर्तिशिल्प के यह कर्णाभूषण अपने आप में विशेष महत्व रखते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. *आचार्य भावना – प्राचीन काल में रूप श्रृंगार, जयपुर, 1995 पृ. सं. 203*
2. *कोठारी गुलाब – गहने क्यों पहनें?, जयपुर, 2017 पृ. सं. 172*
3. *गिरि कमल – भारतीय श्रृंगार, वाराणसी, 1987 पृ. सं. 204*
4. *गिरि कमल – भारतीय श्रृंगार, वाराणसी, 1987 पृ. सं. 237*

5- *Chandra Rai Govind – Studies in the development of ornaments and Jewellery in proto-historic India, Varansi, 1964*